रचना जो रची है, उसकी पालना रूहानियत की शक्ति द्वारा करो

आज जब मैं वतन में पहुँची तो बापदादा सामने खड़े थे और बहुत ही शक्तिशाली, रहमदिल स्वरूप में थे। बाबा के सामने विश्व का ग्लोब इमर्ज था, जिसमें विश्व की अनेक आत्मायें भी इमर्ज थी। बापदादा के मस्तक और माथे के चारों ओर से रंग बिरंगी लाईट की किरणें निकल रही थी। ऐसे लग रहा था जैसे एक विचित्र अति सुन्दर निराला सूर्य चमक रहा था। मैं दूर से देख-देख हर्षित हो रही थी कि आज का दृश्य तो बड़ा वन्डरफुल आकर्षण वाला है। मैं आगे बढ़ती गई तो बापदादा ने हमें दृष्टि दी और ऐसे हुआ जो मेरे मस्तक पर भी चारों ओर लाइट का ताज आ गया और मैं भी बाबा के साथ ग्लोब को लाइट दे रही थी। दृश्य तो बहुत सुन्दर था। कुछ समय के बाद यह दृश्य समाप्त हो गया और बाबा ने हमें बोला – आओ मेरी विश्व सेवाधारी सेवा की साथी बच्ची, आओ, क्या समाचार लाई हो ? मैं बोली बाबा आज तो भारत की मुख्य टीचर्स की मीटिंग का समाचार लाई हूँ। दादी जी ने यादप्यार और सन्देश लाने के लिए कहा था। बाबा बहुत हर्षाते, बहुत-बहुत स्नेह से बोले – बच्ची, यह ग्रुप तो बापदादा के राइट हैण्डस हैं। बापदादा की सेवा के साथी

विश्व परिवर्तन के निमित्त आधार हैं। अब बच्चों को तो विशेष बापदादा सिक व प्रेम से सूक्ष्म पावर की सकाश देते रहते क्योंकि सारे विश्व की स्टेज पर साकार रूप में श्रेष्ठ आत्मायें बाप समान निमित्त एक्जैम्पल तो ये ही हैं। जैसे अंधकार में सितारों की रिमझिम होती है तो समय प्रमाण दु:ख के अंधकार में यह रूहानी सितारे ही प्रकाश पुंज हैं। ज्ञान सूर्य और ज्ञान चन्द्रमा तो बैकबोन है लेकिन बाप देख रहे हैं कि अब तक बच्चों को आत्माओं के तड़फने, दु:ख की पुकार, समय की पुकार सुनने और दिल से लगने में कमी है। जितना रहमदिल इमर्ज रूप में आवश्यकता है वह परेसेन्टेज में कम है। कारण - मैजारिटी बच्चे अपने-अपने स्थानों की सेवा में अपनी चार्ज में ही बिजी रहते हैं। 'हम विश्व के बेहद सेवाधारी आत्मायें हैं', यह नशा और सेवा का उमंग कम है। अब समय प्रमाण इन निमित्त आत्माओं को तो अब बेहद दृष्टि, बेहद की वृत्ति, बेहद की स्थिति की आवश्यकता है। जैसे दादियों द्वारा रूहानियत की अनुभूति करते हैं। ऐसे ही रूहानियत की शक्ति अपने में भरनी आवश्यक है क्योंकि अब रूहानी अनुभूतियाँ कराने की ही ज़रूरत होगी। इसकी विधि है – 1- पहले अपने में चेक करें कि सर्व शक्तियों का स्टाक मेरे में जमा है ? अब तक बाप देखते हैं कि किसी न किसी शक्ति की परसेन्टेज कम है। 2- दूसरी बात - तो सेकण्ड में व्यर्थ संकल्प वा किसी के प्रति भी निगेटिव भाव वा भावना को स्टॉप लगाए परिवर्तन कर सकें। इन दोनों का अभ्यास बार-बार अटेन्शन दे करना चाहिए। अब तक दिखाई देता है कि इसमें समय और कभी-कभी मेहनत लगती है। अब समय की गति फास्ट रूप दिखा रही है लेकिन आप निमित्त आत्माओं के लिए रुक जाती है। इसलिए बापदादा का बच्चों पर प्यार और नाज़ है कि बनना तो कल्प-कल्प इन बच्चों को ही है और बनना ही है। बापदादा हर बच्चे की विशेषता पर बलिहार जाते हैं - ''वाह मेरे बच्चे वाह!'' के गीत गाते हैं। फिर भी जरा सी कमी प्यार में देखी नहीं जाती है, इसलिए बीती सो बीती कर सिर्फ 1- स्व-परिवर्तन की गति को तीव्र बनाओ। 2- बेहद की स्थिति से सेवा में भी रूहानियत की सेवा बढ़ाओ। 3- अपनी जमा सर्व शक्तियों से शुभ संकल्प द्वारा कमज़ोर आत्माओं को मन में प्रसन्नता और सन्तुष्टता का सहयोग दो। किसी की कमज़ोरी को मन में न रख उसको हिम्मत-उमंग-उत्साह बढ़ाओ। यही

बापदादा इस ग्रुप द्वारा बेहद की सेवा चाहते हैं। अब तक जो सेवा की है, उससे बापदादा खुश है। जो किया वह अच्छा हुआ लेकिन अब सेन्टर खोलना, भाषण करना, भिन्न-भिन्न कोर्स कराना, आपके स्टूडेन्टस भी कम होशियार नहीं हैं। उन्हों को योग्य बनाया है इसलिए विस्तार तो होता रहेगा। अब बाप चाहते हैं – विस्तार को सार में लाओ। रचना तो आपने कर ली है, उसकी मुबारक है लेकिन अब उन्हों के पालना की आवश्यकता है क्योंकि रूहानी पालना कम होने से आने वाली आत्मायें वा सेवा साथी अब भी कमज़ोर हैं। रूहानियत की शक्ति कम है इसलिए अब इस पर अटेन्शन दो।

ऐसे कहते आज तो जैसे बापदादा के सामने बार-बार चारों ओर की रिजल्ट सामने थी और बहुत दिल के स्नेह से बापदादा यही चाहते हैं कि अभी-अभी सब बच्चे सम्पन्न बन जाएँ, बेहद की स्थिति में स्थित हो जाएं।

उसके बाद बाबा बोले – बच्ची, मीटिंग का एजेन्डा तो बनाया ही है, सब अच्छा है लेकिन इस वर्ष बापदादा चाहते हैं कि ज़्यादा बड़े बड़े प्रोग्रामस अपनी तरफ से न हों, जिसमें एनर्जी, मनी और स्थिति पर किसी कारण से हलचल हो। वह कम हो, लेकिन हर सेन्टर पर अब तक की हुई सेवा में जो आत्मायें निकली हैं, सम्पर्क वाली हैं वा पक्की ब्राह्मण आत्मायें हैं उनमें से अब क्वालिटी छांटो क्योंकि अब भिन्न-भिन्न क्वालिटी वालों की भिन्न-भिन्न रूप में पालना की आवश्यकता है। अब अच्छे पुरुषार्थियों को वारिस क्वालिटी बनाना है, आगे बढ़ाना है। इसलिए ८- अच्छे निर्विघ्न तीव्र पुरुषार्थी ७- सम्बन्ध सम्पर्क वाले जो सेवा में आगे बढ़ सकते हैं। ६- यथा शक्ति धारणा में रह माइक बन सन्देश देने वाले ५- हार्ड वर्क के समय पर मददगार बनने वाले ४- जो धारणा पढ़ाई में कम लेकिन सहयोग में अच्छे हैं .... हर एक सेन्टर यह लिस्ट बनाए इकट्ठी करो और इन ग्रुपस की चाहे ज़ोन में, चाहे कुछ नजदीक के सेन्टर्स मिलकर इकट्ठा कर उन्हों के अनुसार जो आगे रूहानियत की सेवा चाहिए, पालना चाहिए वह मिल सके और बापदादा सब सेन्टर्स की रिज़ल्ट भी निकालने चाहते हैं।

हे बापदादा के साथी बच्चे, आप सबने बगीचे तो बहुत तैयार किये अब उन फूलों

की छांट-छूट करो, भिन्न-भिन्न गुलदस्ते बनाओ क्योंकि समय और प्रकृति एवररेडी है आपका राज्य लाने के लिए। विश्व में दिलशिकस्ती, निराशा, टेन्शन बहुत फास्ट बढ़ रहा है अब हे रहमदिल (मर्सीफुल) बच्चे, उन आत्माओं पर रहमिदल बन मुक्ति जीवनमुक्ति का वर्सा दिलाओ। ऐसे कहते बापदादा तो बच्चों के लव में लीन हो गये। कुछ समय यही लहर रही फिर हमें प्यार भरी बाँहों में समाए विदाई दी।